विद्यार्थियों के जीवन को आकार देते हैं शिक्षक

ऋषिकेश बी एस

शिक्षक वास्तव में विद्यार्थियों के भविष्य को आकार देते हैं, अत: हमारे राष्ट्र के भविष्य का भी निर्माण करते हैं। इस नेक योगदान के कारण ही भारत में शिक्षक समाज के सबसे ज़्यादा सम्मानित सदस्य थे और सिर्फ़ सबसे अच्छे और विद्वान ही शिक्षक बनते थे।

चित्र 1 : शिक्षकों की शिक्षा के लिए विद्यालय एक बुनियादी मंच है

गणित का होमवर्क करने में अपनी 10 वर्षीय बेटी की मदद करते हुए गौरी को अपनी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका यास्मीन मिस की याद आई। उनकी वजह से ही गौरी के मन से न केवल संख्याओं का डर दूर हुआ, बल्कि वह गणित में स्नातकोत्तर की डिग्री भी पूरी कर पाई। गणित शिक्षिका ने गौरी को केवल गणित ही नहीं पढ़ाई थी, उन्होंने उसे यह विश्वास भी दिलाया था कि लड़कियाँ संख्याओं के मामले में लड़कों जितनी ही होशियार होती हैं (जबकि उनके आस-पास के लोग ऐसा नहीं मानते थे)। यास्मीन मिस ने उसे इस बात के लिए भी प्रोत्साहित किया था कि वह चाहे तो गणित को अपनी जीविका बनाने के बारे में भी सोच सकती है। उन्होंने यह सब बहुत धैर्य के साथ किया था और कक्षा 1 से 4 तक धीरे-धीरे गौरी का आत्मविश्वास बढ़ाया था।

कोडिंग करते समय अंजन जब किसी बिन्दु पर अटक जाता है, उसे डिसूजा मैम की याद आती है। अपने विद्यालयी जीवन के दौरान कोई भी समस्या होने पर वह उन्हीं से बात करता था। वे

> **शैक्षिक अवसर तब बनते हैं जब विद्यार्थी और शिक्षक सीखने के ऐसे उद्देश्यपूर्ण अनुभवों के साथ जुड़ते हैं जो विद्यार्थियों को विभिन्न तरीक़ों से विकसित होने में मदद करते हैं।**

छठी और सातवीं कक्षा में उसकी विज्ञान की शिक्षिका थीं। जब भी कोई नई अवधारणा सामने आती तो अंजन घबराने लगता, और इस वजह से वह उसे ठीक से समझ नहीं पाता था। जब शिक्षिका को इस बात का एहसास हुआ तो उन्होंने लंच ब्रेक के दौरान उसके साथ 15 मिनट बिताने की आदत डाल ली। इस दौरान वे उसे धैर्यपूर्वक नई अवधारणा समझातीं। वे कहतीं कि शान्त दिमाग़ पहला क़दम है। उसके बाद ही समस्या पर ध्यान देना सम्भव होता है। यह मंत्र अंजन के साथ तब भी बना रहा जब वह एक सफल कोडर बन गया। अपनी शिक्षिका की सलाह

से विज्ञान में उसकी रुचि गहरी हुई, और उसने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। आज भी जब अंजन किसी मुश्किल स्थिति में होता है, उसे अपनी विज्ञान शिक्षिका की यह भली-सी सलाह और मार्गदर्शक शब्द याद आते हैं।

एलएलबी के कोर्सवर्क के लिए निबन्ध लिखते समय ऋचा को अपने क़ानूनी कोर्स के प्रकरणों और समाज में लोगों के सामने आने वाले मुद्दों के बीच सम्बन्ध जोड़ने में काफ़ी परेशानी हुई। फ़ौरन उसे अपने सामाजिक अध्ययन के शिक्षक, अनन्तरामन सर, का ख़्याल आया। उन्होंने ही उसके मन में लोगों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को देखने की इच्छा जगाई थी। इसके कारण उसने विद्यालयी पढ़ाई के बाद क़ानून की पढ़ाई करने का फ़ैसला किया था। कक्षा 6, 7 और 8 में सामाजिक अध्ययन पढ़ाते समय अनन्त सर जो कहानियाँ सुनाते थे, वे न केवल प्रेरणादायक होती थीं, बल्कि कई सवाल भी उठाती थीं। जैसे– समाज में इतनी असमानता या भेदभाव क्यों है; कुछ लोग हमेशा ग़रीब क्यों रहते हैं; नागरिक के रूप में हमारे कर्तव्य और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं; आदि।

माध्यमिक विद्यालय के तीन सालों के दौरान कक्षा में जो चर्चाएँ हुआ करती थीं, वे सब ऋचा के दिमाग़ में फिर से उभर आईं। वह जल्द ही अपने निबन्ध के लिए क़ानून और सामाजिक मुद्दों के बीच के सम्बन्धों को समझने में सफल हो गई। मन-ही-मन उसने अनन्त सर को धन्यवाद दिया जिन्होंने पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर वास्तविक जीवन के संघर्षों और स्थितियों को अपने विद्यार्थियों के सामने पेश किया ताकि वे सामाजिक विज्ञान द्वारा प्रस्तुत विभिन्न मुद्दों के बारे में गहराई से सोच सकें।

ये कुछ उदाहरण हैं। लेकिन ऐसे कई उदाहरण हम अपने सहकर्मियों, दोस्तों और परिवार से सुनते रहते हैं। इनमें हर उदाहरण यह दर्शाता है कि जब हम मुश्किल समय से गुज़र रहे होते हैं–चाहे हम माता-पिता हों, शुरुआती कॅरियर वाले कर्मचारी हों या कॉलेज के विद्यार्थी–अकसर अपने किसी शिक्षक के बुद्धिमानी भरे शब्दों या संवेदनशील व्यवहार को याद करते हैं जो हमें अपनी समस्याओं से बाहर निकलने का रास्ता खोजने में मदद करते हैं।

कई बार हम अपने बचपन के विद्यालयी जीवन को याद करते हैं, और उन शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ हो जाते हैं जो हमें सहयोग देते थे, धैर्यवान थे, ग़लतियों को माफ़ करते थे, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, उनमें विद्यार्थियों के प्रति संवेदना थी। ऐसा क्यों है कि शिक्षक का व्यवहार हमारे दिमाग़ में सालों बाद भी ताज़ा बना रहता है? मनोवैज्ञानिकों और तंत्रिका वैज्ञानिकों के पास इसके वैज्ञानिक स्पष्टीकरण हैं, लेकिन शिक्षकों के रूप में, हमारे लिए यह बात स्पष्ट है कि विद्यालय में विद्यार्थी केवल सीखने के लिए ही नहीं आते, बल्कि अपने शुरुआती वर्षों के दौरान सहायता, मार्गदर्शन और देखभाल के लिए भी हमारी ओर देखते हैं।

विद्यालयी शिक्षा, ख़ासतौर पर प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8 तक), कई मायनों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह न केवल हमारी

> **पिछले कुछ दशकों से, दुनिया भर के अधिकांश देशों ने विद्यालयी शिक्षा, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा, को अनिवार्य और प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार बना दिया है।**

शिक्षा के निर्माण के लिए बुनियादी मंच है, बल्कि हमारी पहचान को आकार देने वाले घटकों और जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक मूलभूत योग्यताएँ भी प्रदान करती है जिनमें से कई हमारे शिक्षकों के द्वारा प्रदर्शित किए गए मूल्य होते हैं। इसलिए शिक्षक एक ऐसी भूमिका निभाते हैं जो साल-दर-साल 'पाठ्यक्रम पूरा करने' से कहीं अधिक बड़ी है।

शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन को आकार देते हैं, इसमें कोई नई बात नहीं है। प्राचीन और मध्यकालीन समाजों में, कुलीन वर्ग के पास अपने विद्यार्थियों को समग्र शिक्षा दिलवाने के लिए शिक्षक होते थे। हालाँकि, कुछ शताब्दियों पहले, अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रशिया में शुरू हुई सामूहिक प्राथमिक शिक्षा की स्थापना के बाद से, विद्यालयी शिक्षा पूरे यूरोप में फैल गई, और उपनिवेशवाद के रास्ते दुनिया भर में उनके उपनिवेशों तक पहुँच गई। पिछले कुछ दशकों से, दुनिया भर के अधिकांश देशों ने विद्यालयी शिक्षा, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा, को अनिवार्य और प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार बना दिया है। भारत में, हम लगभग 100 साल के संघर्ष के बाद इस मुक़ाम पर पहुँचे हैं। गोपाल कृष्ण गोखले ने 1910 में ही भारत की ब्रिटिश सरकार से अनिवार्य शिक्षा लागू करने के लिए याचिका दायर की थी। इसके लगभग 100 वर्षों बाद निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में पारित हुआ। इसे शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई अधिनियम) के नाम से भी जाना जाता है। यह 6 से 14 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देता है।

प्रत्येक स्तर पर पहचान को आकार देना

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विद्यालयी शिक्षा की महत्ता को देखते हुए हमें ख़ुद को सौभाग्यशाली समझना चाहिए कि हमें इस क्षेत्र में योगदान करने का अवसर मिला है, और हमें आधुनिक समाज में लोगों के व्यक्तिगत विकास में सहायता करने की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। व्यक्तिगत विकास विद्यालयी शिक्षा के अलग-अलग स्तरों पर होता है, और प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने में मदद करने की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। लेकिन इसके कुछ मूलभूत सिद्धान्त भी होते हैं जो सभी स्तरों को समान रूप से नियंत्रित करते हैं।

एनईपी 2019 (कस्तूरीरंगन समिति की रिपोर्ट 2019) के मसौदे में कहा गया है, "शैक्षिक अवसर तब बनते हैं जब विद्यार्थी और शिक्षक सीखने के ऐसे उद्देश्यपूर्ण अनुभवों के साथ जुड़ते हैं जो विद्यार्थियों को विभिन्न तरीक़ों से विकसित होने में मदद

चित्र 2 : शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण और समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं

करते हैं।" यह दस्तावेज़ प्रत्येक स्तर में अपेक्षित विकास तथा प्रत्येक विद्यार्थी की सर्वोत्कृष्ट प्रगति सुनिश्चित करने के लिए उससे सम्बद्ध उपयुक्त शिक्षण पद्धति को स्पष्ट करता है। शिक्षक वे विशेषज्ञ होते हैं जो विद्यार्थी के विद्यालयी जीवन के विभिन्न स्तरों में इन अनुभवों को अलग-अलग ढंग से निर्मित करते हैं। यदि हम आज एक समाज के रूप में इस मुक़ाम पर हैं तो इस विकास यात्रा में प्रत्येक शिक्षक का योगदान सर्वोपरि है। शिक्षकों ने कड़ी मेहनत की है, और कठिन परिस्थितियों में काम किया है, इसके बावजूद भी कुछ कमियाँ बनी हुई हैं।

> हालाँकि शिक्षक की भूमिका अपने साथ कई चुनौतियाँ लेकर आती है, लेकिन अपने विद्यार्थियों के साथ सार्थक जुड़ाव के बाद शिक्षक को जो पूर्ण सन्तुष्टि मिलती है, वह एक ऐसा अनुभव है जिसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है, और जिसकी इच्छा हर शिक्षक को हमेशा रहती है। इस उद्देश्य के लिए शिक्षक अपने कर्तव्य से, अपनी शिक्षण भूमिका से परे जाकर काम करता है। विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों में यह अलग-अलग तरीक़े से प्रकट होता है।

फ़ाउण्डेशनल स्टेज में 3 से 8 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों का नामांकन होता है। इस स्टेज में शिक्षक इन विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के लिए मुख्यतः 'खेल' का उपयोग करते हैं क्योंकि वे कई पहलुओं पर ध्यान देते हैं। यथा– शारीरिक विकास, सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता विकास, सौन्दर्यशास्त्र और सांस्कृतिक विकास, जैसा कि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़) 2023* में दर्शाया गया है। एक अच्छा शिक्षक खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र का उपयोग करता है जिसमें "उपर्युक्त सभी बातों पर ध्यान देते हुए पोषण और संवेदनशील रिश्तों पर ज़ोर दिया जाता है, तथा साथ ही साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान में आधारभूत क्षमताएँ विकसित की जाती हैं" *(एनसीएफ़ 2023)*। हज़ारों शिक्षक प्रतिदिन इस कार्य में लगे रहते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि भारत भर के विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थी सीखने के लिए ज़रूरी बुनियादी क्षमता हासिल कर सकें।

एनईपी 2020 के अनुसार विद्यालयी शिक्षा की अगली स्टेज **प्रिपरेटरी स्टेज** है। इसमें कक्षा 3 से 5 तक की कक्षाएँ आती हैं। *एनसीएफ़* कहता है कि इस स्तर पर "गतिविधि और खोज-आधारित शिक्षण होना चाहिए जो विद्यार्थियों को औपचारिक कक्षा व्यवस्था के भीतर धीरे-धीरे सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करे।" देश भर में लाखों शिक्षक हैं जो इस स्तर पर विद्यार्थियों को माध्यमिक कक्षाओं के लिए पर्याप्त रूप से तैयार होने में मदद करते हैं, भले ही बुनियादी स्तर पर उनकी शिक्षा कितनी भी मज़बूत क्यों न रही हो। माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस स्तर पर पहुँचने वाले विद्यार्थी सीखने के अलग-अलग पायदान पर होते हैं। अतः यह सुनिश्चित करना बहुत ही कठिन कार्य होता है कि विद्यार्थी बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान *(एफ़एलएन)* को समझ लें, और उसके बाद मिडिल और हाई स्कूल कक्षाओं में अवधारणाओं को समझने के लिए तैयार हो जाएँ। इस स्तर पर शिक्षक अपने ऊपर एक बड़ी ज़िम्मेदारी लेते हैं।

प्राथमिक स्तर के अन्तिम तीन वर्षों को *एनईपी 2020* में 'मिडिल स्कूल' कहा गया है। यह वह स्तर है जहाँ बहुविषयक सीमाएँ मज़बूत हो जाती हैं। विद्यार्थी विषयों के एक विशिष्ट समूह का

अध्ययन करते हैं और पाठ्यक्रम में कई अमूर्त अवधारणाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। इस स्तर के पहले तक शिक्षक सभी विषयों में विद्यार्थियों के साथ जुड़ते हैं। लेकिन इस स्तर के लिए विषय शिक्षक महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि प्रत्येक विषय के पाठ्यक्रम में गहन अवधारणाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की विशाल संख्या यह सुनिश्चित करती है कि ''प्रत्यक्ष निर्देश और अन्वेषण व पूछताछ के अवसरों का सन्तुलन बना रहे'' (*एनसीएफ़ 2023*)। वे विद्यार्थियों की 'अवधारणात्मक समझ प्राप्त करने और पूछताछ के तरीक़ों में निपुण बनने' पर ध्यान देते हैं जैसा कि एनसीएफ़ में कहा गया है। इस शिक्षणशास्त्रीय प्रयास के लिए उच्चतम गुणवत्ता वाली पेशेवर अप्रोच की आवश्यकता होती है, और हमारे देश में ऐसे शिक्षक बड़ी संख्या में हैं जो इस अप्रोच को हमेशा प्रदर्शित करते हैं। ये शिक्षक ही हैं जो देश के हर विद्यार्थी को इस मौलिक अधिकार की गारंटी देते हैं कि उसे उच्च गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा मिले। जिसका उल्लेख आरटीई अधिनियम में किया गया है।

सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण और समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं, भले ही वे किसी भी स्तर की विद्यालयी शिक्षा से जुड़े हों। मैं जितने भी शिक्षकों को जानता हूँ, वे सभी इस 'सम्मान रूपी बैज' को बड़े गर्व के साथ पहनते हैं, और अन्य हितधारकों को दिखाते हैं कि इस भूमिका को अत्यधिक निष्ठा के साथ निभाने और मानव सभ्यता के लिए महत्त्वपूर्ण मूल्यों को बनाए रखने की इच्छा ही ऐसा करने की एकमात्र प्रेरणा है। ऐसा आचरण अनुकरणीय है। अपनी नई पुस्तक *मोरल एम्बीशन (Moral Ambition)* में लोकप्रिय डच इतिहासकार रटगर ब्रेगमैन भी ऐसी ही 'नैतिक महत्त्वाकांक्षा' के बारे में बात करते हैं। यह महत्त्वाकांक्षा केवल अपने लिए सफल होने की नहीं है, बल्कि जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें बदलाव लाने की है। अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगा कि मैंने जितने भी शिक्षकों से मुलाक़ात की है, उनमें यह महत्त्वाकांक्षा है, और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले हर हितधारक में यह भावना होनी चाहिए।

> **शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण और समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं, भले ही वे किसी भी स्तर की विद्यालयी शिक्षा से जुड़े हों।**

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

ऋषिकेश बी एस दो दशकों से अधिक समय से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वे वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में अध्यापन करने के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यों की ज़िम्मेदारी का निर्वहन भी कर रहे हैं।

सम्पर्क : rishikesh@apu.edu.in